पद २३३ (राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

वासरूं म्हशीसीं जोडी। बैल दोहाप्रति जाय रे।।१।। कुंकू तें

डोळ्यांत काजळ कपाळा। हळदीसी मटमटां खाय रे।।२।।

माणिक म्हणे कैसी मुरली मुकुंदा। ऐकतं देहभान जाय रे।।३।.

कृष्णा तूझ्या वेणूंत काय रे। मन मोहित होय रे।।धु.।। गाईचें